संगमयुगीन संस्कृति

संगम कालीन राज्य कुल संघो की तरह थे। इस तरह के राज्यों का उल्लेख कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र में भी किया है। इस प्रकार के राज्यों में कुल के विभिन्न परिवारों तथा व्यवसाय के पुरूष राज्य कार्य में भाग लेते थे। राजा प्रायः वंशानुगत होता था। राजा से यह अपेक्षा की जाती थी कि वह अपनी प्रजा के साथ पुत्रवत व्यवहार करे तथा उसके सुख-दुःख का सदा ध्यान रखे। राजा बड़ी-बड़ी उपाधियाँ धारण करता था जैसे –

- मन्नम्
- वेदम्
- अधिराज आदि

को- नामक उपाधित राजा एवं देवता दोनों के लिए प्रयोग की जाती थी।

पेरूनल – राजा के जन्म दिन को कहा जाता था जो प्रतिवर्ष मनाया जाता था।

कोहन – शब्द का प्रयोग युवराज के लिए होता था। जो राजा के बाद राज्य का प्रमुख होता था।

इलंगो – युवराज के अलावा राजा के अन्य पुत्रों को कहा जाता था।

पुरूनारनुरू – नामक पुस्तक के दक्षिण भारत में पहली बार चक्रवर्ती राजा से सम्बंधित एक कविता का वर्णन मिलता है।

नालवैं – राजधानी में स्थित राजसभा को कहा जाता था। जहाँ राजा प्रतिदिन अपने प्रजा के कष्टों को सुनता था।

मनरम – राजा का न्यायालय होता था। राजा देश का प्रधान न्यायाधीश तथा सभी प्रकार के मामलों की सुनवाई का अंतिम न्यायालय होता था।

संगम युग में स्थानीय शासन को महत्व दिया जाता था तथा नगर एवं गांवों के लिए अलग-अलग सभाएं होती थी। राजा पंचायतों के परामर्श से ही गाँवों के लिए कानून बनाता था। राजा की शक्ति पर पाँच सदस्यीय परिषद द्वारा अंकुश स्थापित किया जाता था। जो पंच महासभा के नाम से जाना जाता था।

1. अमैच्चार (मंत्री)
2. पुरोहितार (पुरोहित)
3. दूतार (राजदूत)
4. ओरार (गुप्तचर)
5. सेनापतियार (सेनापति)

प्रशासन की इकाईयां

मंडलम
↓
नाडुं
↓
बलनाडु (उर)
↓
ग्राम
↓

पेरूल — **बड़े गाँव**

मुदुर या शिरूल — **छोटे गाँव**

- राजा अपने आवास की रक्षा के लिए सशस्त्र महिलाओं को तैनात करता था।
- समय जानने के लिए जलघड़ी का प्रयोग किया जाता था।
- विजित प्रदेशों को लूटने के पश्चात् वहां की फसलों को नष्ट कर दिया जाता था।

संगम कालीन समाज

- संगम साहित्य हमारे सामने आर्य तथा अनार्य संस्कृतियों के समन्वय का चित्र उपस्थित करता है।
- परम्परा के अनुसार चोल राजा कारिकाल ने एक ब्रह्मण कवि को 1 लाख 60 हजार मुद्राएँ प्रदान किया था।
- संगम साहित्य में ब्रह्मणों की दिनचर्या में बताया गया है कि ब्राह्मण मृगचर्म धारण करते थे तथा वेदाध्ययन में लगे रहते थे उनके रहने की अलग बस्ती होती थी।
- किन्तु संगम काल के ब्राह्मण मांस भक्षण करते थे तथा सुरा पीते थे।
- ब्रह्मणों के पश्चात संगम युगीन समाज में वेल्लार वर्ग का स्थान था। संगम साहित्य के अनुसार उनका मुख्य उद्यम कृषि कार्य था और उनके प्रमुख को वेलिर कहा जाता था।
- सभी राजा पेशेवर सैनिकों की सेना रखते थे। सैनिकों के रूप में वेलालर लोगों को काफी महत्व था।
- सेना नायकों को एनाड़ी की उपाधि दी जाती थी।
- वेलालर वर्ग के लोग सरकारी पदों पर नियुक्त किये जाते थे। चोल राज में उनकी उपाधि वेल और परशु तथा पांड्य राज्य में कविदी थी।
- संगम कालीन ग्रंथ से पता चलता है कि संगम काल में चतुरंगिणी सेना थी लेकिन रथ में घोड़े की जगह बैल जोते जाते थे।
- युद्ध भूमि में वीरगति को प्राप्त करने वाले व्यक्ति की याद में स्तम्भ लगाया जाता था जिसे वीरकल कहा जाता था।
- राजा के आवास पर सशस्त्र महिलाएं रक्षक के रूप में रहती थी।
- जलघड़ी द्वारा समय की सूचना दी जाती थी।
- युद्ध में मृत सैनिकों की पत्थर की मूर्तियाँ बनायी जाती थी।
- संगम कवियों ने मरवा नामक जनजातियों में प्रचलित वेत्ची प्रथा गोहरण के अन्तर्गत पशुओं की चोरी तथा लूट का यथेष्ट विवरण प्रस्तुत किया है।
- पुरूनानुरू नामक पुस्तिका में संगम काल की सामाजिक व्यवस्था का पता चलता है पुरूनानुरू पुस्तक में ही समाज की निम्न जातियों का भी उल्लेख मिलता है।

शुद्रुम – ब्रह्मणों को कहा जाता था समाज में इनका सर्वोच्च स्थान था।
अरसर – योद्धा वर्ग को कहा जाता था।
बेनियार – व्यापारी वर्ग
वेल्लार – कृषक वर्ग को
वेदमार – उत्तर भारत से गये ब्रह्मणों को वेदमार कहा जाता था। इसके अतिरिक्त समाज के अन्य वर्ग भी थे।
पुलैयन – नामक जाति रस्सी की चारपायी बनाती थी।
एनियर – शिकारी जातियां थी।
पदवर – मछली पकड़ने वाले
कडेशियर – कृषक मजदूर स्त्रियाँ

- लूट का धन **करै** कहलाता था।
- वेल्लार सबसे धनी कृषक था। इनका विवाह शासकवर्ग में हुआ करता था। दक्षिण भारत में भी विवाह संस्कार प्रचलन में आ गये थे। प्रायः लड़कियों की शादी 12 – 18 वर्ष में कर दी जाती थी। तोलकाप्यिम में 8 प्रकार के विवाहों का उल्लेख है।

पांचतिणै – तमिल प्रदेश में स्त्री तथा पुरूष के सहज प्रणय तथा उसकी विभिन्न अभिव्यक्तियों को पांच तिणै कहा गया है।
कैक्किणै – एक पक्षीय प्रणय (राक्षस, पैशाच प्रणय जैसा)
पेरून्दिणै – अच्छा विवाह (ब्रह्मविवाह, आर्ष विवाह, प्रजापति विवाह जैसा)

- विधवा विवाह तथा पुर्नविवाह का प्रचलन था।
- गणिकाओं को पणितियर कहा जाता था।
- शतीप्रथा प्रचलन में थी।
- इस काल में कवि स्त्रियाँ भी थी जैसे – ओबेयर तथा नच्चेलियर

- स्त्रियां अपने मृत पतियों की आत्मा की शान्ति के लिए चावल के पिण्ड का दान देती थी।
- चावल लोगों का मुख्य साधन था।
- दूध में चावल मिलाकर सांभर नामक एक खाद्यान्न तैयार किया जाता था।
- लोग पान सुपाड़ी के शौकीन थे।
- पासा खेलना मनोरंजन का साधन था।
- पाणर तथा विडैलियर नर्तक - नर्तकियों की मंडली थी जो घूम-घूम कर लोगों का मनोरंजन करते थे।
- समाज में विधवा को बहुत हेय दृष्टि से देखा जाता था।
- समाज में खुले बाल वाली स्त्रियों को चुड़ैल समझा जाता था।
- इस काल में कौवे को शुभ पक्षी माना जाता था जो अतिथियों के आगमन की सूचना देता था।
- कौवे को मार्ग निर्धारण माना जाता था।
- भोजन के पूर्व कौवे को खाने के लिए कुछ सामग्री घर के बाहर रख देने की प्रथा थी।

कर व्यवस्था

राजस्व का प्रमुख स्रोत भूमिकर जो निम्न थे।

कुडिमै, इरय - लगान
मा वेलि - भूमि नापने की इकाई
शुंगम, उलगू - सीमा शुल्क
इर्रादु - गुंण्डा टैक्स

वारियार नामक व्यक्ति कर वसूलता था जो 1/6 भाग लिया जाता था।

न्याय प्रशासन

- राजा सर्वोच्च न्यायाधीश होता था।
- मनरम् – संगमकालीन सुप्रीम कोर्ट थी।
- चोरी करने वाले का हाथ तथा झूठ बोलने वाले की जीभ काट ली जाती थी।

आर्थिक दशा

- चोल राज्य की राजधानी उरैयूर सूती वस्त्रों के लिए प्रसिद्ध था।
- सूत कातने का काम स्त्रियां करती थी।
- चोलों की समृद्धि का मुख्य कारण उनका सुविकसित वस्त्रोंद्योग ही था।
- पुहार (कावेरीपत्तनम्) इस काल का एक समृद्ध बंदरगाह था।
- मुशिरी, पुहार तथा तोण्डी में यवन व्यापारियों की बस्तियां थी।
- यवन व्यापारी अपने जहाजों में सोना भरकर मुशिरी बंदरगाह पर उतरते थे तथा उसके बदले में कालीमिर्च तथा समुद्री रत्न ले जाते थे।
- चेरों की राजधानी करूर से रोमन सुराहियों के टुकड़े तथा सिक्के मिलते हैं।
- अरिकमेडु (पाण्डिचेरी) की खुदाई से रोमन द्वीप के टुकड़े, कांच के कटोरे रत्न, मनके तथा बर्तन प्राप्त किये गये हैं। एक मनके ऊपर (रोमन सम्राट आगस्टस) का चित्र बना हुआ है। पेरीप्लस मे इसे 'पोडुके' कहा गया है।
- आन्तरिक व्यापार (वस्तु-बिनिमय) द्वारा होता था।
- एम्फोय जार – एक लम्बी एवं संकीर्ण गर्दन वाला और दोनों तरफ हत्थेदार जार है।
- चोल राज्य में, सूती वस्त्र, सूत तथा कपास का उत्पादन होता था।
- मुख्य केन्द्र था कावेरी पत्तनम्, पाडेका तथा आरिकामेडु।
- अरिकामेडु को फ्रांसीसी विक्रमपट्टन कहते थे।

- पेरीप्लस तथा टॉलमी ने इसे पोडुके कहा।
- पांड्य राज्यों में मोती-उत्पादन प्रमुख था। मोती उत्पादन का कार्य युद्ध बंदियों से कराया जाता था।
- पेरीप्लस ऑफ एरिथ्रियन सी के अनुसार सर्वाधिक मोती उत्पादन कमारा नामक बंदरगाह से होता था। इसे काल्पी भी कहा जाता था। जो ताम्रपर्णी नदी के किनारे था।
- कालीमिर्च, भैंस, कटीला कटहल
- जड़ी बूटी का निर्यात चेर राज्य से होता था। प्रमुख बंदरगाह था -
  1. तोंडी – पश्चिमीतट
  2. बदंर
  3. नोरा
  4. करवार
  5. मुजरिस
  6. मुभिरी – पश्चिमी तट
  7. ग्रामनोर
  8. मारिचपत्तनम
  9. त्रिवोच्छिसया कुलम
- मुजरिस बंदरगाह से रोम सम्राट आगस्टस के मंदिर भी मिले हैं।
- अरिकामेडु से रोमन सिक्के मिले हैं। जिससे स्पष्ट है कि भारत का रोम साम्राज्य से उच्च कोटि का व्यापार होता था।
- वेदर चेरों का
- सलयुल पांड्यों का
- पुहार चोलों का बंदरगाह था।
- मुजरिस पेरियार नदी के किनारे था।
- काल्वी ताम्र वर्णी नदी के किनारे था।
- समुद्री व्यापारी के नेता को मनैकन
- स्थल व्यापारी के नेता को मसातुवन
- कासु नामक सोने के सिक्के का प्रचलन था।
- ब्रह्मण की हत्या सबसे बड़ा अपराध था।
- पांड्य राज्य का एक व्यापारी मंडल रोम गया था। जहाँ का राजा आगस्टस था।
- वसवसमुद्र (मद्रास) भी एक महत्वपूर्ण बंदरगाह था। जो पाणर नदी या पालार नदी के मुहाने पर स्थित था।

भूमि व्यवस्था

मरूदम	-	उपजाऊ भूमि होती थी।
कुरिंचि	-	पर्वतीय भूमि
मुल्लै	-	चारागाह भूमि
नेथल	-	समुद्र तटीय भूमि
पालै	-	रेगिस्तानी भूमि

धार्मिक जीवन

मुरूगन

- उत्तर भारत से आर्य संस्कृति का प्रसार दक्षिण में अगस्त्य तथा उनके शिष्य कौडिन्य ने किया।
- दक्षिण भारत में मुरूगन या मुरूकन की उपासना सबसे प्राचीन है। बाद में मुरूगन का नाम सुब्रामण्यम भी मिलता है और स्कंद कार्तिकेय से इस देवता का एकीकरण किया जाता है।
- तमिल में मुरूग का अर्थ भी कुमार है। शिव के पुत्र मुरूगन का दूसरा नाम वेलन है। वेलन का संबंध वेल से है। जिसका अर्थ बर्छा है।
- महाभारत तथा पुराणों में स्कंद के अस्त्र को शक्ति कहा गया है।
- मुरूगन की पत्नियों में से एक कुरवस नामक पर्वतीय जनजाति की स्त्री भी है।
- मुरूंगन की सवारी मुर्गा है।
- मुरूगंन की उपासना में वेलनाडल नामक उल्लासमय नृत्य बहुपुजारी आत्म विभोर होकर कतरा है। जिसके सिर पर वेलन (मुरूगा) आकर बैठ जाता है।

विष्णु

- तिरूमल विष्णु का प्रतीक था जिसे चरवाह कहा गया है।
- विष्णु का मंदिर – मिन्नगर कहलाता है।
- पदित्रुपत्तु से पता चलता है कि विष्णु की पूजा-उपासना में तुलसी – पत्र चढ़ाकर घंण्टा बजाया जाता था।

इन्द्र

- कोवरीपत्तनम् में इंद्र की पूजा होती थी।
- कर्म तथा पुर्नजन्म के सिद्धान्तों तथा भाग्यवाद में लोगों की आस्था थी।
- इन्द्र को वर्षा का देवता माना जाता था।
- इसका मंदिर ब्रजकोट्टम कहलाता था।
- बहेलिए जाति के लोग कोर्रलैदेवी की पूजा करते थे जो विजय की देवी थी।
- भैंस की बलि जो परिया को प्रिय थी प्राचीन द्रविड़ परंपरा की द्योतक है।
- मणिमेखलै में कापालिक शैव सन्याशियों की चर्चा है।
- अशोक का पौत्र सम्प्रति श्वेताम्बर जैन सम्प्रदाय को मानता था।
- सम्प्रति को श्वेताम्बर मत में दीक्षा देने वाला आचार्य सुहस्तिन था।